Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 3 (2022)pp: 23-26
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

डॉ. शील कौशिक की लघुकथाओं में सामाजिक युगबोध
('उसी पगडण्डी पर पाँव' लघुकथा संग्रह का विशेष संदर्भ')

स्वर्ण कौर
सहायक प्रध्यापक हिन्दी,
गुरूनानक कॉलेज़ श्री मुक्तसर साहिब।

***R**eceived 03 Mar, 2022; **R**evised 14 Mar, 2022; **A**ccepted 16 Mar, 2022 © The author(s) 2022.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

प्राक्कथनः—साहित्यकार में अपने चारों ओर के समाज और पर्यावरण को जाँचने एवं परखने की तथा उसे पेश करने की अदभुत क्षमता होती है। जो जिस वातावरण में जीता है, वह अपने उसी वातावरण को अपने साहित्य में साकार करने में सक्षम होता है। उसके युग के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिदृश्य उसके साहित्य में स्वभावत ही मुखर हो जाते है। जीवन एक ऐसी अनुभूति है जिसे महसूस करना जितना आसान है, उसे भाषा में बाँध कर प्रस्तुत करना उतना ही कठिन होता है परन्तु साहित्यकार इस काम को बाखूबी करता है। डॉ. शील कौशिक की लघुकथाओं में युगबोध का सामाजिक पक्ष को बड़ी संजीदगी से उभर कर सामने आता है। डॉ.शील कौशिक के लघुकथा संग्रह 'उसी पगडंडी पर पाँव' लघुकथा संग्रह में कुल 62 लघुकथाओं का संग्रह किया है। सुविधाजनक एवं रोचक बनाने हेतु इन 62 लघुकथाओं को चार खण्डों में बाँटा गया है। प्रथम खण्ड में मानवीय संवेदनाओं व मूल्यों से सम्बन्धित 10 लघुकथाएँ हैं। द्वितीय खण्ड में पारिवारिक परिवेश की 11 लघुकथाएँ हैं। तृतीय खण्ड में व्यवस्था का विरोध करती 13 लघुकथाएँ हैं। चतुर्थ खण्ड में सामाजिक व आर्थिक विसंगतियों की 28 लघुकथाएँ हैं। आगे हम इस लघुकथा—संग्रह में लिखी गई सामाजिक व आर्थिक विसंगतियों लघुकथाओं के विषय में विचार करेंगे।

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकार अपने आस—पास जो कुछ भी देखता है, सुनता है, समझता है अथवा अनुभव करता है, उसे अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त कर देता है। साहित्यकार अपने युग युगीन परिस्थितियों को और अपने मनोभावों एवं अनुभवों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देता है। पाठक साहित्यकार की रचना को पढ़ कर मनोरंजन के साथ—साथ युगीन सत्यों के प्रति बोध अथवा जागृति भी प्राप्त करते हैं। इसी बोध को विद्वानों ने युगबोध की संज्ञा प्रदान की है। युगबोध एक छोटा सा शब्द है, किन्तु इसका अर्थ अति व्यापकता लिए हुए है। 'युगबोध' शब्द युग और बोध दो शब्दों से मिल कर बना है। युग शब्द का प्रयोग अनेक सन्दर्भों में अलग—अलग तरीके से किया जाता रहा है। 'युग' एक कालवाची शब्द है। जिसका अर्थ है— काल, समय अथवा निश्चित कालखन्ड। व्युत्पत्ति के आधार पर 'युग' शब्द 'युज' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने से बना है। 'युग' शब्द 'युज' धातु से बना तदभव रूप है, जिसका अर्थ है—जोडना। सामान्य बोलचाल में युग का तात्पर्य 'काल के दीर्घ परिणाम' से लिया जाता है। युग की अपनी कोई निश्चित अवधी नहीं होती है। किसी युग की किसी विशेष प्रवृति, अथवा परिस्थितियों के आधार पर उस युग का नामकरण किया जा सकता है। इस शब्द का प्रयोग पुराणों में निश्चित काल खण्ड हेतु मिलता है। जैसे— सत युग, त्रेता युग, द्वापर युग में भी इस शब्द का प्रयोग किया गया है। बृहत हिन्दी कोश के अनुसार युग का शाब्दिक अर्थ है—''पुर्व समय, काल, जमाना।''1 इसी प्रकार संक्षिप्त शब्द सागर में युग का अर्थ है— ''समय, काल।''2 इससे पता चलता है कि युग का अर्थ समय, काल, जमाना, समयावधि आदि से लिया जा सकता है। अंग्रेजी शब्द कोशों में युग के लिए 'एज'(Age),'एरा' (Era), 'पीरियड' (Period) आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। आम तौर पर 'बोध' शब्द को ज्ञान व जानकारी के सन्दर्भ में ग्रहण किया जाता है। युग शब्द के साथ बोध शब्द का उपयोग आजकल व्यापक रूप से हो रहा है। बोध शब्द स्वयं में व्यापक अर्थ लिए हुए है। माना जाता है कि बोध के कारण ही व्यक्ति में चेतना का विकास होता है। इसलिए बोध शब्द को चेतना का समानार्थक शब्द माना जाता है। बृहत हिन्दी कोश के अनुसार बोध का शाब्दिक अर्थ है— ''बोध, ज्ञान, जानकारी, जताना।3 संक्षिप्त शब्द सागर के अनुसार बोध का अर्थ—''ज्ञान, जानकारी, तसल्ली।''4 इससे ज्ञान होता है कि बोध का अर्थ ज्ञान, जानकारी, तसल्ली, वाकफियत और सजगता होता है। युग और बोध के शाब्दिक अर्थों को जानने से ज्ञात होता है कि युगबोध का अर्थ किसी समय के विषय में ज्ञान या जानकारी होता है। युग के बोध के निर्माण में केवल वर्तमान सक्रिय नहीं रहता, अतीत की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, प्रोफेसर सरिता वाशिष्ठ ने युगबोध की परिभाषा इस प्रकार दी है, ''काल के आयाम में परिपेक्ष्य

विरोध की प्रभावशाली चिन्तनधारा के प्रवाह से उस युग का बोध होता है।"5 इस प्रकार समाज में परम्परागत मूल्यों की जगह नयें मूल्य आ जाते है। साहित्यकार नये मूल्यों को अपने साहित्य में स्थान दे कर हम सभी को उस युग का बोध करवाता है। समाज से अर्जित अनुभवों से जागृत होकर, सर्जक अपनी रचना में अपनी निजी अनुभूतियों का अंकन करने का प्रयास करने लगा है, सर्जक की अनुभूति उस काल विशेष के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से प्रेरणा ग्रहण करती है, यही से युगबोध उसके साहित्य में दिखाई देने लगता है।

उपलब्ध सामग्रीः डॉ. शील कौशिक का साक्षात्कार, उनकी लघुकथा पुस्तक 'उसी पगडंडी पर पाँव', विभिन्न कोश ग्रंथ, सामाजिक विषय से संबंधित विभिन्न पुस्तकें तथा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं और शोध गंगा से प्राप्त मार्ग दर्शन ही इस शोधपत्र की आधारशिला बना।

अध्ययन का उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य हिंदी की प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. शील कौशिक की लघुकथाओं में समाजिक युगबोध का चित्रण करना है। इन लघुकथाओं में मानव जीवन के सामाजिक पक्ष का यथार्थ अंकन किया गया। जिसे उभार कर सामने लाना ही इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य है।

शोध प्रविधिः इस शोधपत्र के निर्माण हेतु विवेचनात्मक एवं विशलेषनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

डॉ. शील कौशिक का जीवन परिचय

डॉ. शील कौशिक जी हरियाणा की सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। डॉ. शील कौशिक जी का नाम आधुनिक हिन्दी साहित्य की नयी पीढ़ी की लेखिकाओं में बड़े सम्मान से लिया जाता है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी डॉ.शील कौशिक का जन्म 19 नवम्बर सन् 1957 को पुराना फरीदाबाद, हरियाणा में माता श्रीमती शकुन्तला पाराशर और पिता श्री रघुवीर सिंह पाराशर जी के घर में एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। एम.एस.सी, बी.एड, एम.एच.एम. (होम्योपैथिकद्धए एल.एल बी, तक उच्च शिक्षा प्राप्त, यह महिला रचनाकार और जीव वैज्ञानिकए एच.सी.एम.एस. (ii),हरियाणा सरकार के स्वस्थ्य विभाग में जिला मलेरिया अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। 2003 में अपने प्रथम कहानी संग्रह 'महक रिश्तों की' कहानी–संग्रह से आपने साहित्य जगत में प्रवेश किया। पिछले 15 वर्षों से वह हिन्दी साहित्य की सेवा कर रही हैं और हिन्दी साहित्य में 17 ग्रंथों की रचना कर चुकी हैं। दिसंबर 2016 का डॉ.शील कौशिक जी को हरियाणा साहित्य अकादमी के द्वारा श्रेष्ठ महिला रचनाकार 2014 के लिए 1 लाख रुपये की राशि से पुरस्कृत किया गया। डॉ. शील कौशिक का लघुकथा–संग्रह 'उसी पगडंडी पर पाँव' में उन्होंने अपने निजी जीवन के अनुभव तथा अपनी संवेदनाओं को आधुनिक युग की परिस्थितियों के साथ जोड़कर यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण मानवतावादी रहा है। उन्होंने नारी मन की विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। लेखिका ने नारी के पारिवारिक और सामाजिक जीवन को बड़े यथार्थ ढंग से अभिव्यंजित किया है। इसके साथ–साथ लेखिका ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, परिस्थितियों के युगानुरूप जीवन के साथ अभिव्यक्त किया है। इसलिए उनका साहित्य युगबोध का संवाहक है।

उसी पगडण्डी पर पाँव में सामाजिक युगबोध

साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध है और दोनों को अलग–अलग करना असम्भव हैं। यह दोनों परस्पर सम्बन्धित हैं। शील जी ने अपनी लघुकथाओं में समाज में मानव की बदलती सोच एवं संबंधों में आए परिवर्तन को बाखूबी से पेश किया है। 'स्वार्थ' लघुकथा में शील जी ने व्यक्तियों के बीच व्याप्त स्वार्थ का चित्रण किया है। इस लघुकथा में पहले तो सचदेवा माधव को पहचानने से भी इनकार कर देता है। किन्तु जब उसे पता चलता है कि माधव उसके गाँव के स्कूल में परीक्षा संचालक की डयूटी के लिए आ रहा है तो उसकी बातचीत का ढंग ही बदल

जाता है। क्योंकि उसका बेटा भी मैट्रिक की परीक्षा, इसी स्कूल में देने वाला है और माधव की सहायता से उसके अच्छे नम्बर आ सकते हैं। यह सोच कर वह प्रसन्न हो कर कहता है, ''अच्छा–अच्छा माधव, मुझे सब याद आ गया। अम्मा यार ! तुम इत्मिनान से यहाँ आ जाओ। तुम्हारा अपना ही घर है, जितने दिन चाहो यहाँ रुको।''6 'कड़वा सच' लघुकथा में विद्या स्वार्थ भावना से ग्रस्त हो कर अपनी बेटी से उसके ससुराल वालों द्वारा ज्यादा काम करवाने की बात सुन कर उसे कहती है कि तू कह दिया कर कि मुझ से इतना काम नहीं होता और वह अपनी पुत्री को अपने पति मनीष को काबू में करके सास–ससुर से अलग होने के लिए दबाव डालने को कहती है।''7 'गिरगिट' लघुकथा में मनोवैज्ञानिक ढंग से बताया गया है कि कैसे लोग अपने स्वार्थ के लिए गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। 'छद्म राय' लघुकथा तथा 'वे कुछ औरकहते' लघुकथा में शील कौशिक जी ने एक ऐसे ही पाषाण हृदय पुत्र के स्वार्थभाव को उदघाटित किया गया है। स्वार्थ के मामले में पुत्र–वधूएँ भी पीछे नहीं शील कौशिक जी की लघुकथा दरवाजा न खुला' में ऐसी ही बहू के चरित्र को चित्रित किया है, जो स्वार्थ में इतनी अन्धी हो गई है कि खुद ऐ.सी. रूम में सोती है और बूढ़ी बीमार सास को उस कमरे के भीतर प्रवेश भी नहीं करने देती।

उन्होंने उपेक्षित मानव की यथार्थ दशा को भी दिखाया है। 'तुम्हारी मर्जी है' लघुकथा के कथ्य में एक पुत्र द्वारा उपेक्षित एक ऐसी ही माता की कथा है।शील जी की लघुकथा 'फिजूल की बात' में वह बताती है कि माता–पिता अपने बच्चों को व्यावहारिक बातों की शिक्षा देते हैं पर वे उन शिक्षा ओं का फिजूल की बात समझ बैठते हैं। 'यथार्थ' लघुकथा में बूढ़ी श्यामा को बुखारहोता है, तो उसे याद आता है कि –''सुधांशु को जब टाईफाइड हुआ था तो वह उसे अपने पास से हटने नहीं देता था किन्तु अब उसके पुत्र के पास इतना भी समय नहीं कि उसका हाल पूछ सके।''8 यह इस युग की विडम्बना ही तो है कि संतान उस माँ को समय नहीं दे पाती, जिसके जीवन काल का सारा समय अपनी संतान का पालन करने में गुजरा है। 'एकाकी' लघुकथा में राम बाबू की कथा का चित्रण है, जो अब अकेलेपन में भी खुश हैं। शील कौशिक जी की लघुकथाओं में पति–पत्नी के सम्बन्ध को गृहस्थी की धूरी के समान बताया गया है। 'सेफ्टी वाल्व' लघुकथा में पति को पत्नी का सेफ्टी वाल्व कहा गया है। पति–पत्नी के लिए एक ऐसा सहारा होता है। जो उसकी हर चिन्ता को दूर कर देता है। 'गलत द्वार' लघुकथा में ऐसे निष्ठुर अर्थ पिशाच (लालची) कपूत सेठ का चित्रण है, जो अपने गरीब मज़दूर को पैसे नहीं देता। डॉ. शील कौशिक ने सामाजिक समस्याओं का चित्रण 'सामाजिक व आर्थिक विसंगतियों की लघुकथाएँ' शीर्षक में किया है। उन्होंने समाज की प्रत्येक प्रधान समस्या का चित्रण करने की कोशिश की है। 'सच' लघुकथा

में उन गरीब नौकरीपेशा लोगों की करुण कथा है। अजुन के चाचा की मृत्यु का तार ले कर जब अर्जुन का साथी आता है, तभी उसके मालिक को उसकी सच्चाई पर यकीन होता है। इससे पहले आशीष उसकी उपेक्षा करते हुए कहता है, ''मै तुम्हारी सब चाल समझता हूँ। नित नये बहाने बना कर काम बीच में छोड़ देना, फिर दिहाड़ी बढ़ाने के लिए कहना, तुम लोगों की आदत है।''9 'होली' लघुकथा में ऐसे एक पाषाण हृदय सेठ की गाथा है, जिसका नौकर सेठ से तनख्वाह माँगता रह जाता है, ताकि उसके बच्चे का उपचार हो सके, पर सेठ उसके दर्द को नहीं समझता अमीर लोग अपनी अमीरी के नशे में इस कदर चूर रहते है कि उसे दूसरों का दर्द दिखाई ही नहीं देता।''अरे बावले रुपये क्या पेड़ों पर लगते हैं? जो तुझे तोड कर दे दूँ।''10 भारतीय समाज में लड़के और लड़की में भेदभाव आम देखा जाता है। डॉ.शील कौशिक ने युग की इस भयंकर सच्चाई का चित्रण बडे ही करुणामयी अंदाज में किया है। लड़की के जन्म पर शोक मनाया जाता है। अगर जन्म के समय ही पुत्री की मृत्यु हो जाये तो परिवार वालों को कोई दुख नहीं होता। वह मन ही मन प्रसन्न होते हैं। 'बोझ' लघुकथा में पुत्री को बोझ समझने की इसी प्रवृति पर कटाक्ष किया गया है। 'भेदभाव' लघुकथा में दिखाया गया है कि माता–पिता कैसे बेटे और बेटियों के बीच भेद–भाव करते हैं। डॉ.शील कौशिक जी की लघुकथाओं में नारी जाति की उपेक्षा करने वालों पर तीव्र कटाक्ष करते हुए नारी की प्रगति में बाधक बनने वालों को नारी के असली रूप के दर्शन करवाने की चेष्ठा की गई है। 'रूढ़ मानसिकता' लघुकथा में बताया गया है कि स्त्री को बराबरी का दर्जा देना पुरूष की मानसिकता को गवारा नहीं। 'प्रकाश की किरण' लघुकथा में दहेज़ प्रथा की त्रासदी का वर्णन है। डॉ.शील कौशिक ने महँगी उपचार व्यवस्था और गरीबों की

*Corresponding Author: स्वर्ण कौर

मार्मिक स्थिति का चित्रण अपनी लघुकथाओं में किया है। 'दर्द से मुक्ति' लघुकथा में गरीबी से दुखी एक पुत्र अपने पिता को बचाने हेतु अपना गुर्दा बेच देता है।

निष्कर्ष –अन्ततः यह स्पष्ट हो जाता है कि ''डॉ.शील कौशिक की लघुकथाएँ इंसान को इंसान की इंसानियत से रू–ब–रू कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनकी लोकप्रियता का कारण इनकी लघुकथाओं मे निहित विषय की सत्यता, अभिव्यक्ति की सरलता और जीवन की विविधता के साथ–साथ युगबोध का चित्रण भी है। 'उसी पगडंडी पर पाँव' लघुकथा–संग्रह में उन्होंने अपने आस–पास के परिवेश से सम्बन्धित घटनाओं को व्यंग्य के माध्यम से अपनी लघुकथाओं में चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। उनकी सभी लघुकथाएँ युगबोध का उदघाटन करती हुई प्रतीत होती हैं।''7 सामाजिक बोध को चित्रित करते हुए शील कौशिक जी ने व्यक्तिगत बोध के साथ–साथ पारिवारिक बोध को भी पेश किया है और समाज में व्याप्त दहेज, महँगाई, गरीबी आदि सामाजिक समस्याओं को भी बड़े व्यंग्यपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत कर उनके समाधान के विषय में भी विशेष स्पष्टीकरण दिया है।

संन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्री कालिका प्रसाद, (सं.) बृहत् हिन्दी–कोश, ज्ञानमण्डल प्रकाशन लि., बनारस, द्वितीय संस्करण, 2013,पृ.992
2. रामचन्द वर्मा, (सं.) संक्षिप्त शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2014, पृ.740
3. प्रसाद, बृहद हिन्दी कोश, पृ. 1120
4. रामचन्द वर्मा, संक्षिप्त शब्द सागर, पृ. 827
5. डॉ सरिता वाशिष्ठ, युगबोध और हिन्दी नाटक, निर्मल पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली, प्रसं.1993, पृ.1
6. डॉ. शील कौशिक : उसी पगडंडी पर पाँव, पूनम प्रकाशन, 6–बी, कौशिक पुरी, पुराना सीलमपुर, दिल्ली–110031 प्रथम संस्करण–2004,स्वार्थ, पृ.87
7. वही,कडवा सच पृ.41
8. वही,यथार्थ, पृ.39
9. वही, सच पृ.84
10. वही, होली,पृ.77
11. वही, भूमिका से ।

*Corresponding Author: स्वर्ण कौर